अनाम है, अरूप है , अकाल है
अधांध है, अझूझ है, अझंझ है
अखंड है , अनंत है, अभंग है
असूझ है, अनूप है, अपार है
अचल है, अटल है, अखिल है
अगाह है, अथाह है, अगम है
रहीम है, करीम है, रफ़ीक है
सर्वत्र है, नित्य है, सत्य है ।।

— जसवीर और जसपाल

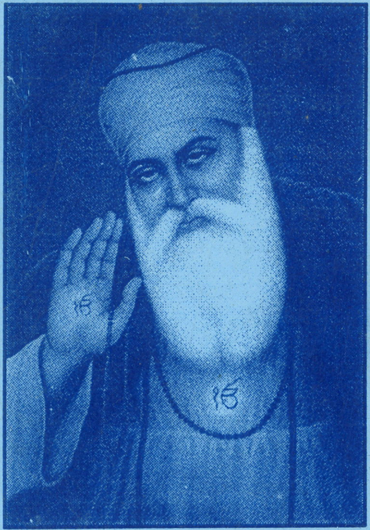
With Kind Support of :-

Shri G.S. Khanuja

Prince Enterprises

Near High Court , Bilaspur (C.G.)

Ph: 503881 (O) ,236946 (R), 98930-89662(M)



गुरुवाणी

दस गुरुओं के नाम

		गद्दी का आरंभ
गुरु नानक देव जी	1469–1539	1469
गुरु अंगद देव जी	1504–1552	1539
गुरु अमरदास जी	1479–1574	1551
गुरु रामदास जी	1534–1581	1574
गुरु अर्जुन देव जी	1563–1606	1580
गुरु हरगोविंद जी	1595–1644	1606
गुरु हरिराय जी	1630–1661	1644
गुरु हरिकृष्ण जी	1656–1664	1661
गुरु तेगबहादुर जी	1621–1675	1664
गुरु गोविंद सिंह जी	1666–1708	1675
श्री गुरु ग्रंथ साहिब	(1604)	

੧ ओंकार

सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

परमात्मा एक है। उसका नाम सत्य है। वह कर्ता पुरुषः निर्भय, निर्वैर और अकाल मूर्ति है। वह योनियों से परे है। उसे गुरु कृपा से ही प्राप्त किया जा सकता है।

आदि सचु जुगादि सचु
है भी सचु, नानक हो सी भी सचु ।।

आदि में भी सच था, युगों के आरंभ में भी सच था। आज भी सच है और आगे भी सच रहेगा।

हुकमै अंदरि सभु को
बाहरि हुकम न कोई
नानक हुकमै जे बुझे
त हउमे कहैं न कोई ।।

सब उसी के हुक्म के अंतर्गत है। हुक्म के बाहर कोई नहीं है। हुक्म को जो समझता है, वह अभिमान नहीं करता।

थापिआ न जाइ, कीता न होई
आपे आपि निरंजन सोई ।।

न उसकी स्थापना होती है, न ही उसे बनाया जाता है। वह अपने आप से ही है।

सभना जीआ का इकु दाता
सो मैं विसरी न जाई ।।

सभी जीवों का एक ही दाता है, उसे मैं भूल न जाऊँ।

नानक भगता सदा विगासु
सुणिए दूख पाप का नाश ।।

भक्तों को सदा आनंद रहता है, श्रवण से दुःख और पाप का नाश होता है।

ऐसा नामु निरंजन होई
जे को मनि जाणै मनि कोई ।।

परमात्मा का नाम ऐसा होता है, कोई इसको मन में धारण कर जान ले।

जो तुधु भावै साई भलीकार
तू सदा सलामति निरंकार ।।

जो तुम्हें अच्छा लगे, वही भला है। हे निरंकार! तू सदा ही सलामत है।

भरीऐ हथु पैरु तनु देह
पाणी धोतै उतरसु खेह
मूत पलीती कपड़ु होइ
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ
भरीऐ मति पापा कै संगि
ओहु धोपै नावै कै रंगि ।।

हाथ - पैर में लगे मैल, तो धुल जाए पानी से।
कपड़ा गन्दा हो जाए, तो धुल जाए साबुन से।
भर जाए बुद्धि पाप से, तो धुले वह नाम रंग से।

सभि गुण तेरे मैं नाही कोइ
विणु गुण कीते भगति न होइ।।

सब गुण तेरे हैं, मेरा कोई नहीं। बिना समझ के भक्ति नहीं होती।

ता के अंत न पाए जाहि
एहु अंतु न जाणै कोई ।।

उसका अंत नहीं पाया जा सकता। यही अंत है कि उसे कोई नहीं जानता।

जेवडु भावै तेवडु होई
नानक जाणै साचा सोई।।

जैसा वह चाहे, वैसा ही होता है। वह सच्चा आप ही जानता है।

सेई तुधुनो गावहि, जो तुधु भावनि

वही तुझे गाते हैं, जो तुझे भाते हैं।

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन की करहि बिभूति
खिंहा कालु कुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति।।

संतोष की मुद्रा, श्रम की झोली , ध्यान की विभूति, गोदड़ी काल की यह काया है और योग से प्रतीति डंडा है।

मनि जीतै जगु जीत ।।

मन जीतने से जगत जीता जा सकता है।

आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुग जुगु एको वेसु ।।

वह आदि, अरंग, अनादि और अनाहद है। हर युग में एक ही है।

ओहु देखै ओना नदरि न आवै
बहुता एहु विडाणु ।।

वह देखता है, उसका हम नहीं देख पाते। यही बड़ा आश्चर्य है।

इक दू जीभौ लख होहि
लख होवहि लख वीस
लखु लखु गेड़ा आखीअहि
एकु नामु जगदीस ।।

एक जीभ की जगह लाख हों, लाख से भी बीस गुनी हो, उनसे लाख-लाख बार कहें हम-एक नाम जगदीश का।

ना ओहि मरहि ना ठागे जाहि
जिन कै रामु वसै मन माहि ।।

जिनके मन में राम बसते हैं , न वह मरते हैं और न ठगे जाते हैं ।

जतु पहारा धीरज सुनिआरु
अहरणि मति वेदु हथीआरु
भउ खला अगनि तप ताउ
भांडा भाउ अंमृतु तितु ढालि
घड़ीए सबदु सची टकसाल ।।

योग की भट्ठी, धैर्य का सुनार, बुद्धि की अहिरण, ज्ञान का हथौड़ा, भय की धौंकनी, तप की आग, प्रेम का बर्तन और डाल कर अमृत उसमें , शब्द का टकसाल घड़ो।

सरबं साचा एकु है, दूजा नाहीं कोई ।।

सर्व में सच्चा एक ही है, दूसरा कोई नहीं है।

आपे कंडा तोलु तराजी आपे

तोलणहारा।।

परमात्मा आप ही काँटा है, आप ही तोल है,

आप ही तराजू है और आप ही तोलनेवाला है।

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु

घट ही तीरथ नावा

एक सबदु मेरै प्रानि बसतु है

बाहुड़ि जनमि न आवा ।।

मन मंदिर है और शरीर फकीर का भेष है। मेरे अंतर्मन में तीर्थ स्थान है। एक शब्द ही मेरे प्राण में बसता है। अब मैं बहुत जन्मों में नहीं आऊँगा।

तुझ बिनु अवरु न जाणा

जो तुधु भावै सोई चंगा ।।

मैं तेरे बिना और किसी को नहीं जानता। जो तुझे भाये , वही अच्छा है।

रे मन ऐसो करि संनिआसा

बन से सदन सबै करि समझहु

मन ही माहि उदासा

जत की जटा जोग को मज्जनु

नेम के नखुन बढ़ाओ

गिआन गुरु आतम उपदेसहु

नाम बिभूत लगाओ ।।

मेरे मन, ऐसा सन्यास करो कि घर को जंगल समझो। सब प्रकार से मन के भीतर वैराग्य धरो। यति की जटाएं रखो, योग का स्नान करो और नियम के नाखून बढ़ाओ। गुरु के ज्ञान द्वारा मन को उपदेश दो और नाम की विभूति लगाओ।

समना गला समरथु सुआमी
सो किउ मनहु विसारे
कहै नानकु मन मेरे
सदा रहु हरि नालै ।।

जो सभी बातों में समर्थ है, उस स्वामी को तू क्यूँ भूलता है ? नानक कहते हैं : हे मन ! तू सदा परमात्मा के साथ रह ।

नाम जिन कै मनि वसिआ
वाजे सबद घनेरे
कहै नानकु सचे साहिब
किआ नाही घर तेरे ।।

जिसके मन में नाम बसता है, उसके अंदर शब्द गहरे बजते हैं । नानक कहते हैं : सच्चे साहिब , तेरे घर क्या नहीं है ।

चाला निराली भगताह केरी
बिखम मारगि चलणा
खंनिअहु तिखी वालहु निकी
एतु मारगि जाणा ।।

भक्तों की चाल निराली है, उन्हें विषम मार्ग पर चलना है । खण्डे से तीव्र और बाल से सूक्ष्म- इसी मार्ग पर जाना है ।

अनदु सुणहु वडभागिहो
सगल मनोरथ पूरे
पारब्रहमु प्रभु पाइआ
उतरे सगल विसूरे ।।

बड़े भाग्य वालो ! आनंद-वाणी सुनो , जो सभी मनोरथ पूर्ण करती है । पारब्रह्म प्रभु को प्राप्त कर सभी भ्रम दूर हो जाते हैं ।

सुणते पुनीत कहते पवितु
सतिगुरु रहिआ भरपूरे
बिनवंति नानक गुर चरण लागे
वाजे अनहद तूरे ।।

सुनने वाले पवित्र हैं और कहने वाले भी पवित्र हैं क्योंकि इनमें सद्गुरु बसता है। जो गुरु के चरणों में रहते हैं, उनके अंदर अनाहद के स्वर बजते हैं।

तूं करता करणा मैं नाही
जा हउ करी न होई।।

तू सृष्टि का कर्ता है, मैं कुछ भी नहीं हूँ। जो मैं करता हूँ वह होता नहीं है।

कहु नानक करते कीआ बाता
जो किछु करणा सु करि रहिआ ।।

यह कर्ता की बातें हैं। जो कुछ उसे करना है, वह कर रहा है।

सोई सोई सदा सचु साहिबु
साचा साची नाई
है भी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई।।

वह ही सच्चा मालिक है। सदा सच्चा है। है भी और होगा भी। न जाता है और न जाएगा। उसी ने रचना रचाई है।

साचे नाम की लागै भूख
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ।।

मुझे सच्चे नाम की भूख लगी है । उस भूख से मैं सब दुखों को खा जाता हूँ ।

ना ओहु मरै, ना होवे सोगु
देदा रहै न चूकै भोगु
गुण एहो होए नाहीं कोई
ना को होआ ना को होई।।

ना वह मरता है और ना ही उसे शोक होता है । वह सदैव देता ही है , कभी थकता नहीं ।ना ऐसा कोई हुआ है और ना ही वैसा होगा ।

जननि पिता लोक सुत बनिता
कोई न किस की धरिआ
सिरि सिरि रिजकु संबाई ठाकुर
काहे मन भउ करिआ ।।

माता, पिता, लोक, पुत्र, स्त्री - कोई किसी का नहीं है । वही रोजी - रोटी देता है । एक ठाकुर ही सबको सँभालता है । हे मन ! फिर तुम चिंता क्यूँ करते हो ?

सभि धिआवहि तुधु जी
हरि सचे सिरजणहारा
सभि जीउ तुमारे जी
तूं जीआ का दातारा
हरि धिआवहु संतहु जी
सभि दूख विसारण हारा।।

सब तुझे ही ध्यान करते हैं। तू सच्चा सृजनकार है। सभी जीव तेरे हैं और तू ही उनका दाता है ।हे संतों ! हरि को ही याद करो, वही दुःख दूर करने वाला है ।

तू आपे दाता आपे भुगता जी

हर तुधु बिनु अवरु न जाणा ।।

तू ही दाता है और भोगने वाला भी। मैं तेरे सिवा किसी और को नहीं जानता।

तुझ बिन दूजा कोई नाहि

जीउ जंत सभि तेरा खेलु

तेरा कीआ सभु होई

तुधु बिन दूजा अवरु न कोई ।।

तेरे बिना कोई दूजा नहीं है । जीव जंतु सब तेरा खेल है। तेरा ही किया सब होगा, तेरे बिना और कोई नहीं है ।

मन एकु न चेतसि मूड़ मना ।।

हे मूर्ख मन ! उस एक को याद क्यों नहीं करता ?

अवरि काज तेरै कितै न काम

मिलु साध संगति, भजु केवल नाम।।

और कार्य तेरे किसी मतलब के नहीं हैं । साधु संगत में रहो और केवल उसका ही नाम भजो ।

कहु नानक हम नीच करंमा

सरणि परे की राखहु सरमा।।

मैं नीच कर्म करता हूँ पर अब तेरी शरण में आया हूँ, तो प्रभु! अब मेरी लाज रखो ।

हमरी करो हाथ दै रच्छा
पूरन होइ चित्त की इच्छा।।

प्रभु सहारा देकर हमारी रक्षा करो और मन की इच्छा पूरी करो।

राखि लेहु मुहि राखन हारे
साहिब संत सहाइ प्यारे ।।

हे परमात्मा ! तुम संतों के प्यारे हो, मेरी रक्षा करो ।

घट घट के अंतर की जानत
भले बुरे की पीर पछानत ।।

वह अंदर की हर बात जानता है और हर पीड़ा को पहचानता है।

संतन दुख पाए ते दुखी
सुख पाए साधुन के सुखी
एक एक की पीर पछाने
घट घट की पट पट की जानैं ।।

परमात्मा संतों के दु:ख से दु:खी और उनके सुख से सुखी होता है। वह हर दर्द को पहचानता है और सबके दिल की जानता है।

दास जान कर क्रिपा करहु मुहि
हार परा मैं आनि द्वार तुहि
दास जान दै हाथ उबारो
हमरे सभ बैरीअन संघारो।।

हे प्रभु ! मुझे दास जान कर मुझ पर कृपा करो। मैं तेरे द्वार हारा-थका आया हूं । मुझे संकट से उबारो और सभी बैरिओं का नाश करो ।

हरि हरिजन दुई एक है
बिब विचार कछु नाहिं
जल ते उपज तरंग जिउ
जल ही बिखै समाहि।।

हरि और हरिजन दोनों एक हैं ,उनमें कोई अंतर नहीं है। जैसे जल से उत्पन्न तरंग जल में ही समाती हैं ।

सगल दुआर कउ छाड़ि कै
गहिओ तुहारो दुआर
बंहि गहे की लाज आए
गोविंद दास तुहार ।।

हे गोविंद ! मैं तुम्हारा दास हूँ। सभी द्वारों को छोड़कर, मैं तुम्हारे द्वार आया हूं। आप शरणागत की लाज रखो।

तिसु साहिब की टेक
नानक मनै माहि
जिसु सिमरत सुखु होइ
सगले दूख जाहि।।

मेरे मन में उस मालिक का आश्रय है , जिसे याद करने से सारे दुख दूर हो जाते हैं।

गगन में थाल

रवि चंदु दीपक बने, तारिका मंडल

जनक मोती

धूप मल आनलो, पवणु चवरो करे

सगल बनराइ फूलंत जोती

कैसी आरती होइ

भव खंडना तेरी आरती।।

आकाश की थाली, सूरज - चँद्रमा के दीपक, तारों की माला, सुगंध पवन और सारी प्रकृति के फूल।हे भवखंडना! ऐसी हो तेरी आरती।

सभ महि जोति, जोति है सोई

तिस दै चानणि, सभ महि चानणु होइ।।

सब में जो ज्योति है, वही परमात्मा है।उसी से सर्वत्र रोशनी है।

हरि जन हरि हरि नामि समाणे

दुखु जनम मरण भव खंडा है

हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे

हरि राखु राखु वड वडा है।।

जो भक्त भगवान के नाम में लीन है, वह जन्म - मरण से मुक्त है।हे परमात्मा! हम तेरे दास हैं, हमारी रक्षा करो।

अंतरजामी पुरख बिधाते
सरधा मन की पूरे
नानक दास इहै सुखु मागै
मो कउ करि संतन की धूरे ।।

हे अंतर्यामी विधाता ! मेरे मन की श्रद्धा पूरी करो । मैं यही सुख माँगता हूँ कि मुझे संतों की चरण धूल मिले ।

करि किरपा प्रभु आपणी
तेरे दरसन होइ पिआस
प्रभु तुधु बिनु दूजा को नाहीं
नानक की अरदासि ।।

हे प्रभु ! अपनी कृपा करो ताकि हमेशा तेरे दर्शन की पिपासा रहे । तेरे सिवा दूजा कोई नहीं हैं, यही नानक की प्रार्थना है ।

पवन गुरु पाणी पिता,
माता धरती महतु
दिवस राति दुई दाई दाइआ,
खेलै सगल जगतु ।।
चंगिआईआ बुरिआईआं,
वाचै धरम हदूरि
करमी आपो आपणी,
के नैड़े के दूरि ।।
जिनी नामु धिआईआ,
गए मसकति घालि
नानक ते मुख उजले,
केती छुटी नालि ।।

पवन गुरु है, पानी पिता है और धरती माता है। दिन-रात दाई और दाया है, जिनसे सारा जगत खेल रहा है। अच्छे और बुरे कर्मों के अनुसार कोई रहता है पास और कोई हो जाता है दूर। जिसने नाम का ध्यान किया, वह पार हो जाता है। उसका मुख चमकता है और उसके साथ अनेकों मुक्त हो जाते हैं।

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सर्वत दा भला ।।

हमेशा उन्नति हो, सभी का भला हो।

वाहिगुरु जी दा खालसा।
वाहिगुरु जी दी फतह ।।